

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत  
तृतीय वर्ष बी.ए.  
हिंदी  
सेमेस्टर-5

(2016-2017, 2017-2018 एवम् 2018-2019 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-11 मध्ययुगीन कविता Core Course-

**प्रस्तावना:** हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक- जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1.सूरदास-भ्रमरगीत सार-(श्रीकृष्ण का वचन उद्धव के प्रति)

2.तुलसीदास-अयोध्याकाण्ड

पाठ्यपुस्तक- मध्यकालीन कविता का पाठ-संपा.डॉ.त्रिभुवननाथ शुक्ल

(प्रकाशक-जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 सगुण-भक्ति धारा की लाक्षणिकताएँ।

सूरदास एवम् तुलसीदास का साहित्यिक परिचय।

ईकाई-2 भ्रमरगीत में वर्णित गोपियों का विरह-वर्णन

भ्रमरगीत में वर्णित निर्गुण पर सगुण की विजय

भ्रमरगीत की गोपियाँ

भ्रमरगीत का उद्धव

भ्रमरगीत; कला-पक्ष

ईकाई-3 रामचरित मानस के 'अयोध्याकाण्ड' की कथावस्तु

'अयोध्याकाण्ड' के पात्र-श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, सीता, कैकेयी, निषादराज, दशरथ आदि।

'अयोध्याकाण्ड': भाव-पक्ष एवम् कला-पक्ष

ईकाई-4 तुलसीदास की गीति-योजना

तुलसीदास की भक्ति-भावना

तुलसीदास की भाषा।

'अयोध्याकाण्ड' शीर्षक की सार्थकता।

भ्रमरगीत का उद्धव

भ्रमरगीत की कुब्जा

भ्रमरगीत में श्रीकृष्ण का उद्धव के प्रति वचन

भ्रमरगीत के संवाद

भ्रमरगीत की भाषा।

अंक-विभाजन-

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

## संदर्भ-पुस्तकें-

1. भक्तिकाव्य का समाजशास्त्र-प्रेमशंकर
2. भक्तिकाव्य की भूमिका- प्रेमशंकर
3. सूरदास-हरवंसलाल शर्मा
4. सूर-साहित्य- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. महाकवि सूरदास-नंददुलारे वाजपेयी
6. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
7. हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारीप्रसाद द्विवेदी
9. हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र

## अथवा

### प्रश्नपत्र-11 मध्ययुगीन कविता Core Course-

**प्रस्तावना:** हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इ स काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक- जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

#### 1. कबीर के सबद

#### 2. जायसी-नागमती-वियोग खण्ड

पाठ्यपुस्तक- मध्यकालीन कविता का पाठ-संपा.डॉ.त्रिभुवन नाथ शुक्ल

(प्रकाशक-जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

#### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 निर्गुण भक्ति-धारा की प्रमुख विशेषताएँ।

भक्तिकाल हिंदी साहित्य का सुवर्ण युग।

ईकाई-2 कबीर की भक्ति-भावना।

कबीर के सबद में विषय-वैविध्य

कबीर-काव्य का कलापक्ष

ईकाई-3 'पद्मावत' की कथावस्तु

'पद्मावत' में नागमती का विरह-वर्णन

'नागमती वियोग खण्ड' में पद्मावती का संदेश।

ईकाई-4 कबीर के राम

कबीर के अनुसार गुरु का महत्व

कबीर की उलटबाँसियाँ

कबीर का भाषा-शैली।

'नागमती वियोग खण्ड' में प्रकृति-चित्रण

जायसी की भाषा।

#### अंक-विभाजन-

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

## संदर्भ-पुस्तकें-

1. भक्तिकाव्य का समाजशास्त्र-प्रेमशंकर
2. भक्तिकाव्य की भूमिका- प्रेमशंकर
3. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य-डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव
4. जायसी का पद्मावत-डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
5. भक्ति और रीतिकालीन हिंदी मुक्तक काव्य-जितेन्द्र पाठक
6. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
7. हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ. नगेन्द्र

+++++

## प्रश्नपत्र- 12 गद्य-विधाएँ Core Course-

**प्रस्तावना-** आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का विकास तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यपुस्तक- गद्य-विविधा-डॉ. नागेश्वर सिंह  
डॉ. माया प्रसाद

(प्रकाशन,)

### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

- ईकाई-1 साहित्य की महत्ता: महावीर प्रसाद द्विवेदी  
लोभ और प्रीति-रामचंद्र शुक्ल  
तुम कब जाओगे, अतिथि-शरद जोशी
- ईकाई-2 देवदारु-हजारी प्रसाद द्विवेदी  
जमुना के तीरे-तीरे-विद्यानिवास मिश्र  
ठकुरी बाबा-महादेवी वर्मा
- ईकाई-3 साहित्य और जीवन-नन्ददुलारे वाजपेयी  
लाल कनेर के फूल और लालटेन वाली नाव-धर्मवीर भारती  
हिंदी भूषण बाबू शिवपूजन सहाय-रामविलास शर्मा
- ईकाई-4 चरित्र का मानदण्ड-वासुद्वशरण अग्रवाल  
दिवस का महाकाव्य-कुबेरनाथ राय  
श्रीमान का स्वागत-बालमुकुन्द गुप्त

### अंक-विभाजन-

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

### संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी निबंध-गोविन्दलाल छाबडा
2. हरिशंकर परसाई: व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि-राधेमोहन शर्मा
3. हिंदी का आधुनिक यात्रा-साहित्य-डॉ. प्रतापपाल शर्मा

- 4.हरिश्चंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग-चेतना-डॉ.आभा भट्ट
- 5.श्री रामवृक्ष बेनीपुरी-डॉ.रामविलास शर्मा
- 6.प्रेमचंद: एक विवेचन-डॉ.इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली

+++++

**प्रश्नपत्र- 12 गद्य-विधाएँ Core Course-**

**प्रस्तावना** -आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंध कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का ,उपन्यास ,नाटक , ,परिवेश ,विकास तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

**पाठ्यपुस्तक- गद्य-प्रभा –डॉ.आलोक गुप्त**  
(राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली)

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

- ईकाई-1 हुएन-संग-रामचंद्र शुक्ल  
जीवन का व्यवसाय-महादेवी वर्मा  
सुख-काशीनाथ सिंह
- ईकाई-2 त्यागमूर्ति निराला-शिवपूजन सहाय  
होली और ओणम-डॉ.एन.इ.विश्वनाथ अय्यर  
नदिया गहरी नाव पुरानी-अमृतलाल वेगड़
- ईकाई-3 भारतीय संस्कृति-डॉ.राजेन्द्र प्रसाद  
फणीश्वरनाथ रेणु-नागार्जुन  
वे बहादुरी से विके-हरिश्चंकर परसाई
- ईकाई-4 विचारकों के सम्मुख एक नई समस्या-आचार्य नरेन्द्र देव  
जौनपुर का एक असाधारण साधारण पुरुष-अमृतलाल नागर  
अम्लीय वर्षा-विश्वव्यापी खतरा-एन.मणिवासकम

**अंक-विभाजन-**

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
- ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)
- सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

- 1.हिंदी निबंध-गोविन्दलाल छाबडा
- 2.आचार्य रामचंद्र शुक्ल:निबंध संरचना और काव्य-चितन-डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह
- 3.हिंदी का आधुनिक यात्रा-साहित्य-डॉ.प्रतापपाल शर्मा
- 4.हिंदी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन-डॉ.बाबूराम
- 5.अज्ञेय: एक अध्ययन-डॉ.भोलाभाई पटेल
- 6.अज्ञेय:सृजन और संघर्ष-राजकमल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- 7.कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु-डॉ.चंद्रभानु सोनवणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
- 8.प्रेमचंद: एक विवेचन-डॉ.इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली

+++++

### प्रश्नपत्र-13 भारतीय काव्यशास्त्र Elective Course-03

**प्रस्तावना** -किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को-उसकी समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

#### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 अ.काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार

आ. काव्य-गुण, काव्य-दोष

ईकाई-2 अ.रस, अलंकार, रीति, ध्वनि और वक्रोक्ति सिद्धांतों का सामान्य परिचय

आ.शब्द-शक्ति का परिचय

ईकाई-3 निम्नलिखित काव्यालंकार: लक्षण और उदाहरण-

उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, विभावना, विशेषण विपर्यय, मानवीकरण, श्लेष, यमक, अनुप्रास और वक्रोक्ति।

ईकाई-4 निम्नलिखित छंदों के लक्षण एवम् उदाहरण-

दोहा, रोला, सवैया, छप्पय, धनाक्षरी, इंद्रवज्रा, मंदाक्रांता, वसंततिलका, शिखरिणी और शार्दूलविक्रीडित।

#### अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

#### संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी आलोचना की बीसवीं सदी-निर्मला जैन
2. रस-चितन के विविध आयाम-सं.आनंदप्रकाश दीक्षित
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना-डॉ.रामचंद्र तिवारी
4. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र
5. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र
6. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त

+++++

### प्रश्नपत्र-14 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-

**प्रस्तावना** -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

#### पाठ्यपुस्तक- पृथिवीवल्लभ-कन्हैयालाल मुनशी

#### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 कन्हैयालाल मुनशी का साहित्यिक परिचय

गुजराती एतिहासिक उपन्यास का विकास: सामान्य परिचय

'पृथिवीवल्लभ' का कथानक-मूल्यांकन

‘पृथिवीवल्लभ’ एक एतिहासिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 ‘पृथिवीवल्लभ’ के मुख्य पात्र-मुंज, मृणाल

ईकाई-3 ‘पृथिवीवल्लभ’ उपन्यास की संवाद-योजना

‘पृथिवीवल्लभ’ में वातावरण-योजना

ईकाई-4 ‘पृथिवीवल्लभ’ की वर्णन-शैली

‘पृथिवीवल्लभ’ का उद्देश्य

‘पृथिवीवल्लभ’ शीर्षक की सार्थकता।

‘पृथिवीवल्लभ’ का अंत।

#### अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

#### संदर्भ-पुस्तकें-

1. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-३-४ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा-१-२ -डॉ. धीरूभाई ठाकर
3. गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी-राधेश्याम शर्मा
4. गुजराती नवलथामां पात्रनिरूपण - २ - डॉ. रमेश दवे
5. गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी
6. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-रमेश त्रिवेदी

अथवा

#### प्रश्नपत्र-14 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-

**प्रस्तावना** - भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप- रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

#### पाठ्यपुस्तक- वळामणां - पन्नालाल पटेल

##### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 पन्नालाल पटेल का साहित्यिक परिचय

गुजराती जानपदी (ऑचलिक) उपन्यास का विकास: सामान्य परिचय

‘वळामणां’ का कथानक-मूल्यांकन

‘वळामणां’ एक सानाजिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 ‘वळामणां’ के पात्र।

ईकाई-3 ‘वळामणां’ उपन्यास की संवाद-योजना

‘वळामणां’ में वातावरण-योजना।

ईकाई-4 ‘वळामणां’ की भाषा-शैली

‘वळामणां’ का उद्देश्य

‘वळामणां’ शीर्षक की सार्थकता।

### अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

### संदर्भ-पुस्तकें-

1. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-३-४ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा-१-२ -डॉ. धीरूभाई ठाकर
3. गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी-राधेश्याम शर्मा
4. गुजराती नवलथामां पात्रनिरूपण - २ - डॉ. रमेश दवे
5. गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी
6. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-रमेश त्रिवेदी

+++++

### प्रश्नपत्र-15 हिंदी भाषा और लिपि Core Course

**प्रस्तावना-** साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का ज्ञान अनिवार्य है। भाषा- वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास-क्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक-स्वरूप, विविध रूपता तथा हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं की जानकारी एवम् देवनागरी लिपि के विकास, वैशिष्ट्य और मानकीकरण का विवरण हिंदी के छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 1. वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत एवम् अपभ्रंश का सामान्य परिचय।

2. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का सामान्य परिचय

3. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास

4. हिंदी की उपभाषाएँ एवम् बोलियाँ।

ईकाई-2 1. प्रशासन-व्यवस्था और भाषा

2. भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता

3. राजभाषा (कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति

ईकाई-3. 1. हिंदी कम्प्यूटीकरण

2. भूमंडलीकरण के परिपेक्ष्य में हिंदी का भविष्य।

ईकाई-4. राजभाषा विषयक सांविधानिक प्रावधान-

अ. राजभाषा-प्रावधान ( अनुच्छेद ३४३ से ३५१ ),

आ. राष्ट्रपति के आदेश ( १९५२, १९५५, १९६० )

इ. राजभाषा अधिनियम १९६३ ( यथा संशोधित १९६७ )

ई. राजभाषा संकल्प ( १९६८ ) यथानुमोदित ( १९९१ )

उ. राजभाषा नियम १९७६

### अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

### संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी भाषा का इतिहास-डॉ. भोलानाथ तिवारी

2. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास-उदयनारायण तिवारी

3. राजभाषा हिंदी: प्रगति और प्रयाण-सं. इकबाल अहमद
4. मानक हिंदी व्याकरण-पृथ्वीनाथ पांडेय
5. प्रयोजनपरक हिंदी-सूर्यप्रसाद दीक्षित-योगेन्द्र प्रताप सिंह
6. राजभाषा हिंदी-कैलाशचंद्र भाटिया
7. राजभाषा का स्वरूप-कैलाशचंद्र भाटिया

+++++

### प्रश्नपत्र-16 प्रयोजनमूलक हिंदी-1

**प्रस्तावना-** भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

- ईकाई-1 १. प्रयोजनमूलक हिंदी: अभिप्राय और उसकी परिव्याप्ति  
 २. प्रयोजनमूलक हिंदी: प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र
- ईकाई-2 ३. प्रयोजनमूलक हिंदी और पारिभाषिक शब्दावली  
 ४. प्रशासनिक हिंदी और उसकी शब्दावली  
 ५. प्रशासनिक पत्राचार और उसके प्रकार

ईकाई-3 संक्षेपण और टिप्पण।

ईकाई-4 अ. प्रशासनिक पदनाम- Accountant, Advisor, Administrator, Announcer,

Calculator, Chancellor, Clerk, Collector, Copyist, Editor, Enquiry Clerk, Gate Keeper, Guide, Hostess, In Charge, Inspector, Instructor, Justice, Medical Officer, Peon, Registrar, Surveyor, Translator, Typist, Worker.

ब. अनुभागों के नाम- Department Agriculture, Department Co -Operation, Department Community Development, Department Communications, Department Company Law & Insurance, Department Cottage Industries, Department Economic Affairs, Department Family Planning, Department Food, Department Iron & Steel, Department Labour and Employment, Department Light House, Department Legal Affairs, Department Meteorological, Department Port, Department Post & Telegraphs, Department Parliamentary Affairs, Department Printing & Stationery, Department Petroleum, Department Revenue, Department Sales Tax, Department statistics, Department Social Welfare, Department Tourism, Department Transport & Shipping.

### अंक-विभाजन-

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
 ईकाई 3 से टिप्पणियाँ (दो विकल्प में से एक) (7×1=07 अंक) और  
 ईकाई 4 से पदनाम-अनुभागों पर आधारित प्रश्न (1×7=07 अंक)  
 ईकाई 1 और 4 से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी: संरचना एवम् अनुप्रयोग-दिनेश गुप्त
2. प्रयोजनमूलक हिंदी-दिनेश गुप्त
3. प्रयोगात्मक और प्रयोजनमूलक हिंदी-दिनेश गुप्त
4. व्यावसायिक संप्रेषण-डॉ.अनूपचंद्र भायाणी
5. प्रयोजनमूलक हिंदी: पारिभाषिक शब्दावली तथा टिप्पण प्रारूपण-डॉ.मधु धवन
6. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण-प्रो.विराज
7. शुद्ध हिंदी-डॉ.विजयपाल सिंह
8. प्रशासनिक एवम् कार्यालयी हिंदी-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ.दिनेशकुमार
9. कार्यालयी हिंदी - डॉ.विजयपाल
10. राजभाषा हिंदी और राजकीय पत्र-व्यवहार-घनश्याम अग्रवाल

**HINDI**  
**B.A. DEGREE COURSE**  
**5<sup>th</sup> SEMESTER**

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -11 मध्यकालीन कविता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -11 मध्यकालीन कविता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 12 हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 12 हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -13 साहित्य के सिद्धांत और हिंदी आलोचना Elective Course-	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
6	PAPER -14 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -14 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 15 हिंदी भाषा और लिपि Core Course-11	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 16 प्रयोजनमूलक हिंदी-1 Core Course-12	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
10	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

**Model of Time-Table**

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06 Self Study Course				Each Day 4 <sup>th</sup> Hour can be used for Library work//presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday					

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत  
तृतीय वर्ष बी.ए.  
हिंदी  
सेमेस्टर-6

(2016-2017, 2017-2018 एवम् 2018-2019 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-17 रीतिकालीन कविता- Core Course

**प्रस्तावना:** हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक- जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. बिहारी सतसई

पाठ्यपुस्तक- बिहारी सतसई सार-संपा.अम्बिकाचरण शर्मा-विश्वम्भर 'अरुण'

(प्रकाशक-रंजन प्रकाशन, बांके विलास, सिटी स्टेशन मार्ग, आगरा-3)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1.रीतिकाल: नामकरण और समय-सीमा और प्रमुख विशेषताएँ।

2. रीतिसिद्ध काव्य-धारा की प्रमुख विशेषताएँ।

3.बिहारी का साहित्यिक परिचय।

ईकाई-2 4.हिंदी सतसई परंपरा और उसमें 'बिहारी सतसई' का स्थान।

5.बिहारी: एक सफल मुक्तककार।

6.'बिहारी सतसई' में विरह-वर्णन।

ईकाई-3 7. 'बिहारी सतसई' में नीति

8. बिहारी की बहुज्ञता

9. 'बिहारी सतसई' में प्रकृति-चित्रण

ईकाई-4 10.बिहारी की भाषा-शैली।

11. बिहारी की भक्ति-भावना।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

- 1.हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र
- 2.हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेर्य
- 3.हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारीप्रसाद द्विवेदी
- 4.हिंदी साहित्य का अतीत-१-२ -विश्वनाथप्रसाद मिश्र
- 5.हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
- 6.हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह
- 7.हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
- 8.रीतिकालीन साहित्य कोश-विजयपाल सिंह
- 9.बिहारी:एक मूल्यांकन-डॉ.हरिचरण शर्मा
- 10.बिहारी रत्नाकर-जगन्नाथदास रत्नाकर

प्रश्नपत्र-17 रीतिकालीन कविता Core Course-

**प्रस्तावना:** हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक- जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

**1. रामचंद्रचंद्रिका -केशवदास**

पाठ्यपुस्तक- केशव-सुधा-संपा.डॉ.विजयपाल सिंह  
(प्रकाशक-राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली)

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

- ईकाई-1 1.रीतिकाल: नामकरण और समय-सीमा और प्रमुख विशेषताएँ।  
2. रीतिबद्ध काव्य-धारा की प्रमुख विशेषताएँ।  
3. कवि आचार्य केशवदास का साहित्यिक परिचय।
- ईकाई-2 4.'रामचंद्रिका' का काव्य स्वरूप व कथानक।  
5.'राम चंद्रिका' के मुख्य पात्र- राम और भरत।  
6.'राम चंद्रिका' का भाव-पक्ष।  
7. 'राम चंद्रिका' के गौण पात्र- सीता, लक्ष्मण और रावण।
- ईकाई-3 8. 'राम चंद्रिका' में प्रकृति-चित्रण।  
9. 'राम चंद्रिका' में संवाद-योजना।
- ईकाई-4 10. 'राम चंद्रिका' की भाषा।  
11. 'राम चंद्रिका' में हास्य-व्यंग्य।

**अंक-विभाजन-**

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

- 1.हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र
- 2.हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय
- 3.हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारीप्रसाद द्विवेदी
- 4.हिंदी साहित्य का अतीत-१-२ -विश्वनाथप्रसाद मिश्र
- 5.हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
- 6.हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह
- 7.हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
- 8.रीतिकालीन साहित्य कोश-विजयपाल सिंह
- 9.भक्ति और रीतिकालीन हिंदी मुक्तक काव्य-जितेन्द्र पाठक
- 10.रीतिकालीन साहित्य कोश-विजयपाल सिंह
11. रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि-रामफेर त्रिपाठी

+++++

## प्रश्नपत्र- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-

**प्रस्तावना** - भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

### पाठ्यपुस्तक - बलचनमा-नागार्जुन

#### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

ईकाई-1 आँचलिक उपन्यास: शब्द, परिभाषा, तत्त्व और विशेषताएँ

‘बलचनमा’ का कथानक-मूल्यांकन

बलचनमा’ एक आँचलिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 बलचनमा’ का नायक।

बलचनमा’ के गौण पात्र

ईकाई-3 बलचनमा’ में संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 बलचनमा’ की भाषा-शैली

बलचनमा’का उद्देश्य।

बलचनमा’ शीर्षक की सार्थकता।

#### अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित उपन्यास से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

#### संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा. डॉ. रामदरश मिश्र- डॉ. ज्ञानचंद्र गुप्त (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
2. हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ. गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली)
3. आंचलिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ. नगीना जैन (अक्षर प्रकाशन, दिल्ली)
4. उपन्यास का स्वरूप-डॉ. शशिभूषण सिंहल (आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली-53)
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में कृषक-जीवन-डॉ. उत्तम पटेल (शांति प्रकाशन, रोहतक)
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का स्वरूप- डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय
7. हिंदी उपन्यास: एक अंतर्गता-डॉ. रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली)
8. नागार्जुन-संपा. सुरेशचंद्र त्यागी, आशिर प्रकाशन, सहारनपुर
9. हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ. गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली)
10. बाबा नागार्जुन-संपा. नरेन्द्र कोहली
11. हिंदी उपन्यास-जनवादी परंपरा-संपा. कुँवरपाल सिंह
12. नागार्जुन का उपन्यास साहित्य-समसामयिक संदर्भ-डॉ. सुरश यादव

+++++

प्रश्नपत्र- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-

**प्रस्तावना** -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

पाठ्यपुस्तक- गिरती दीवारें (संक्षिप्त) -उपेन्द्रनाथ अशक  
(राजकमल प्रकाश प्रा.लि, नई दिल्ली)

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

ईकाई-1 उपन्यास: शब्द, परिभाषा, तत्त्व और सामाजिक उपन्यास की विशेषताएँ

‘गिरती दीवारें’ का कथानक-मूल्यांकन

‘गिरती दीवारें’ में मध्यमवर्गीय जीवन का चित्रण

ईकाई-2 ‘गिरती दीवारें’ के मुख्यपात्र-चेतन, शादीराम, रामानंद, शेठ फकीरचंद।

ईकाई-3 ‘गिरती दीवारें’ के गौण पात्र।

‘गिरती दीवारें’ में संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 ‘गिरती दीवारें’ की भाषा-शैली

‘गिरती दीवारें’ का उद्देश्य।

‘गिरती दीवारें’ शीर्षक की सार्थकता।

**अंक-विभाजन-**

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित उपन्यास से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

1. हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
- 2.हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
- 3.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास-सामाजिक विघटन और औपन्यासिक प्रतिफलन-डॉ.मंजु गोयल (अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद)
- 4.उपन्यास का स्वरूप-डॉ.शशिभूषण सिंहल (आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली-53)
- 5.कुछ और गद्य रचनाएँ: शमशेर बहादुर सिंह
6. अठारह उपन्यास-राजेन्द्र यादव (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
- 7.हिंदी उपन्यास: एक अंतर्गता-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
- 8.हिंदी के चर्चित उपन्यास-डॉ.भगवतीशरण मिश्र (राजपाल एण्ड सन्ज़, नई दिल्ली)

+++++

## प्रश्नपत्र-19 पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत Elective Course-03

**प्रस्तावना-** किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

### अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र

- ईकाई-1 1. साहित्य: परिभाषा, साहित्य और समाज  
2. कविता: परिभाषा, कविता-तत्त्व, कविता: प्रकार ( प्रबंध और प्रगीत )
- ईकाई-2 3.समालोचना: स्वरूप, समालोचना: प्रकार, आलोचक के गुण  
4. उपन्यास: परिभाषा. तत्त्व और प्रकार।  
5. नाटक: परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।
- ईकाई-3 6.कहानी: परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।  
7.निबंध: परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।
- ईकाई-4 8. प्रमुख हिंदी आलोचक: परिचयात्मक अध्ययन एवम् योगदान-  
1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी  
3. डॉ.नंददुलारे वाजपेयी 4. डॉ.रामविलास शर्मा।

### अंक-विभाजन-

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

### संदर्भ-पुस्तकें-

1. पाश्चात्य साहित्य-चितन-सं.निर्मला जैन
2. हिंदी आलोचना की बीसवीं सदी-निर्मला जैन
3. रस-चितन के विविध आयाम-सं.आनंदप्रकाश दीक्षित
4. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना-डॉ.रामचंद्र तिवारी
5. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र
6. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.भगीरथ मिश्र
8. साहित्य के प्रमुख पक्ष-डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी
9. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
10. मार्क्सवादी,समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना-डॉ.शशिभूषण पांडेय
11. शास्त्रवादी और स्वच्छंदतावादी साहित्यादर्श और समीक्षा-प्रणाली- पी.वासवदत्ता
12. हिंदी आलोचना का विकास-नंदकिशोर नवल
13. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.विजयपाल सिंह

+++++

**प्रश्नपत्र-20 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-**

**प्रस्तावना** -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप- रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

**1. कुंवरबाईनुं मामेरं - प्रेमानंद**

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

- ईकाई-1 प्रेमानंद का साहित्यिक परिचय  
गुजराती आख्यानक काव्य का स्वरूप, विकास और विशेषताएँ  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' का कथानक:मूल्यांकन
- ईकाई-2 'कुंवरबाईनुं मामेरं': एक सफल आख्यानक काव्य  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' में पात्र-योजना  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' में रस-योजना
- ईकाई-3 'कुंवरबाईनुं मामेरं' में संवाद-योजना  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' के गौण-पात्र
- ईकाई-4 'कुंवरबाईनुं मामेरं' की भाषा-शैली  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' का उद्देश्य  
'कुंवरबाईनुं मामेरं' शीर्षक की सार्थकता।

**अंक-विभाजन-**

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
पठित आख्यान से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

1. प्राचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-१ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2. मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-२ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
3. प्रेमानंद: एक समालोचना-रमेश शुक्ल
4. गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी

**अथवा**

**प्रश्नपत्र-20 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-**

**प्रस्तावना** -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप- रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

**1. ओखाहरण - प्रेमानंद**

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

- ईकाई-1 प्रेमानंद का साहित्यिक परिचय  
गुजराती आख्यानक काव्य का स्वरूप, विकास और विशेषताएँ

- ‘ओखाहरण’ का कथानक : मूल्यांकन  
 ईकाई-2 ‘ओखाहरण’: एक सफल आख्यानक काव्य  
 ‘ओखाहरण’ में पात्र-योजना  
 ‘ओखाहरण’ में रस-योजना  
 ईकाई-3 ‘ओखाहरण’ में संवाद-योजना  
 ‘ओखाहरण’ के गौण-पात्र  
 ईकाई-4 ‘ओखाहरण’की भाषा-शैली  
 ‘ओखाहरण’ का उद्देश्य  
 ‘ओखाहरण’ शीर्षक की सार्थकता।

**अंक-विभाजन-**

- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
 ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
 पठित आख्यान से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

1. प्राचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-१ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2. मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-२ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
3. प्रेमानंद: एक समालोचना-रमेश शुक्ल
4. गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी

+++++

**प्रश्नपत्र-21 हिंदी व्याकरण Core Course-**

**प्रस्तावना-** भाषा के शुद्ध व परिनिष्ठित रूप की जान कारी के लिए व्याकरण शास्त्र का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। इसके उपयोग से ही हिंदी की प्रकृति का परिचय मिल सकता है।

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

- ईकाई-1 1. शब्द की परिभाषा एवम् शब्दों का वर्गीकरण  
 ईकाई-2 1. संज्ञा: परिभाषा एवम् भेद  
 2. सर्वनाम : परिभाषा एवम् भेद  
 ईकाई-3 1. विशेषण की परिभाषा एवम् प्रकार  
 2. क्रिया की परिभाषा एवम् प्रकार  
 ईकाई-4 1. वचन एवम् कारक का परिचय।

**अंक-विभाजन-**

- ईकाई 1-2 और 3-4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)  
 सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)  
 सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

१. हिंदी व्याकरण-पं. कामताप्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
२. हिंदी व्याकरण मीमांसा-काशीराम शर्मा
3. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण-डॉ. हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. हिंदी रूप-रचना भाग-1-2- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

+++++

**प्रस्तावना-** भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए , रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

**अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र**

ईकाई-1 हिंदी का वैज्ञानिक एवम् तकनीकी रूप।

हिंदी के संवर्धन में प्रयोजनमूलक हिंदी की भूमिका।

प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषताएँ या गुण।

ईकाई-2 वैज्ञानिक, तकनीकी एवम् प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिंदी।

हिंदी अनुप्रयोग में अनुवाद की भूमिका।

अनुवाद की अवधारणा, उसका महत्व और विभिन्न सिद्धांत।

ईकाई-3 हिंदी में मीडिया लेखन

जनसंचार-माध्यम: अभिप्राय, स्वरूप और विस्तार

जनसंचार-माध्यमों के प्रकार

ईकाई-4 समाचार-लेखन और हिंदी

संवाद-लेखन और हिंदी

रेडियो-लेखन और हिंदी

विज्ञापन-लेखन।

**अंक-विभाजन-**

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

**संदर्भ-पुस्तकें-**

1. अनुवाद-बोध - डॉ.गार्गी गुप्त
2. अनुवाद-विज्ञान- डॉ.भोलानाथ तिवारी
3. जनसंचार:विविध आयाम- ब्रजमोहन गुप्त
4. मीडिया और साहित्य- सुधीश पचौरी
5. व्यावहारिक अनुवाद- डॉ.एन.ई.विश्वनाथ ऐयर
6. प्रयोजनपरक हिंदी- प्रो.सूर्यप्रसाद दीक्षित एवम् डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह
7. प्रयोजनमूलक हिंदी: विविध आयाम- माया सिंह
8. प्रयोजन मूलक हिंदी का अध्ययन- डॉ.सुशीला गुप्ता

+++++

**HINDI**  
**B.A. DEGREE COURSE**  
**6<sup>th</sup> SEMESTER**

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -17 मध्यकालीन कविता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -17 मध्यकालीन कविता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -19 साहित्य के सिद्धांत और हिंदी आलोचना Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
6	PAPER -20 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -20 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 21 हिंदी व्याकरण Core Course-15	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 22 प्रयोजनमूलक हिंदी-1 Core Course-16	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
6	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

**Model of Time-Table**

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06				Each Day 4 <sup>th</sup> Hour can be used for Library work//presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

+++++